मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 8

MTT-041

सिंधी-हिन्दी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर उपाधि

(पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2024

एम.टी.टी.-041 : सिंधी-हिन्दी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिए गए हैं।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लगभग **250-300** शब्दों में दीजिए : 2×15=30

   (i) सिंधी और हिन्दी की भाषिक और सामाजिक समानताओं पर प्रकाश डालिए।

   (ii) सिंधी-हिन्दी की भाषिक विशिष्टताओं के विशिष्ट प्रयोग के सन्दर्भ में लेख लिखिए।

   (iii) सिंधी-हिन्दी शब्द-रचना सम्बन्धी समानताओं का वर्णन कीजिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** सिंधी शब्दों के हिन्दी पर्याय लिखते हुए उनका सिंधी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 5×2=10

(i) विजु

(ii) जोड़ जक

(iii) विंदुर

(iv) संगतराश

(v) पाड़

(vi) गैर मुनासिबु

(vii) ज़बानी

(viii) थुल्हो

(ix) सियाणो

(x) वेकिरो

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** हिन्दी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखते हुए उनका हिन्दी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 5×2=10

(i) गीला

(ii) कुलीन

(iii) उल्टा

(iv) पौने तीन

(v) यात्री

(vi) सप्ताह

(vii) शिक्षा

(viii) पुस्तक

(ix) प्यास

(x) पहिया

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** कहावतों/मुहावरों का सिंधो से हिन्दी/हिन्दी से सिंधी में अनुवाद करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए : 5×2=10

(i) पोल पधिरा करणु

(ii) खिखो विखो थियणु

(iii) अगर तगरू चटु थियणु

(iv) अखियुनि ते पर्दो चढ़णु

(v) बहि थियणु

(vi) कोख उजड़ जाना

(vii) गरदन ऐंठना

(viii) चंग चढ़ाना

(ix) चाँद का टुकड़ा

(x) छाती पर मूँग दलना

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए : 5×1=5

(i) खाधो ड्ाढो लज़ीज़ आहे।

(ii) मां मास्तरियाणी आहियां।

(iii) छा तव्हां जे जाइ में लिफ़्ट लगल आहे ?

(iv) तव्हां लाइ होटल सम्राट में कमरो महफूज़/रिज़र्व कयल आहे।

(v) तव्हां कहिड़े विषय में डिग्री हासिलु कई आहे ?

(vi) मुंहिंजो जन्म डोहुं अठावीहीं फेबरवरी ते ईंदो आहे।

(vii) भारत जो आज़ादीउन खां पोइ सिंध खे पाकिस्तान जो हिकु हिस्सो बणायो वियो।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** वाक्यों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 5×1=5

(i) सिंधी भाषा की 06 उपभाषाएँ हैं।

(ii) भारत सरकार ने सिंधी भाषा को 10 अप्रैल, 1967 के दिन संविधान में स्थान दिया।

(iii) ज्ञानमार्गी कवियों में सिरमौर कवि सामी हैं।

(iv) लोकनृत्य करते समय कौन-से वाद्य बजाए जाते हैं ?

(v) यह सुप्रसिद्ध स्मारक सम्राट दाहरसेन की है।

(vi) क्या विश्वविद्यालय में छात्रावास की व्यवस्था है ?

(vii) मुझे बुखार है।

7. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिन्दी मं अनुवाद कीजिए : 1×15=15

(i) मुल्क में संस्कृतीअ जो प्रदर्शनु पूरीअ रीति कलाकारु कराए सघे थो. इहो ई कारण आहे जो जड़हिं बि को देशु चाहे थोत ब़ियनि देशनि खे

असां जे संस्कृतीअ जो पतो पवे तॾहिं कलाकारनि खे ई उहो कमु सुपुर्द कयो थो वञे ऐं उहे कलाकार पूरीअ माना में देश जा एलिची बणिजी पंहिजे कला द्वारां पंहिंजे मुल्क जो मानु मथे था कनि.

मुल्क जूं झूनियूं रीतियूं रस्मूं कहिड़ियूं आहिनि, देश जा किसा कहाणियूं कहिड़े बनावत ते बीठल आहिनि, कौम जो अदबु कहिड़े मयार जो आहे, जनता का अकीदा ऐं विश्वास कहिड़ा आहिनि, जनता जे राॻ यानी मौसिकी, संगीत में लुताफ़त शामिलु आहे, माण्हुनि जी पोशाक कहिड़ी आहे. संदनि हार सींगर जो सामान कहिड़ो आहे, संदनि खाधो पीतो कहिड़ो आहे, हुननि जी रहिणी कहिणी कहिड़ी आहे वग़ैरह, वग़ैरह. इन्हनि सभिनी ॻाल्हियुनि ते कलाकारु स्थूल या सूख्यमु कला द्वारां रोशिनी विझी पंहिंजे देश जे सभ्यता, संस्कृतीअ ते रोशिनी विझे थो. इस्थूलु कला खे कोठीनि उपयोगी कला या मादी फ़नु ऐं सूख्यमु कला खे कोठीनि ललित कला या लतीफ फ़नु. स्थूल कला में ज़ाहिरी तौर दुनियवी ख़ज़ाननि ऐं पंहिंजे सरीर खे सुखनि जो मालु मौजूदु हंदो आहे ऐं सूख्यमु कला में समायल हूंदी आहे आत्मिक आनंद जी सामग्री. कला जो दर्जो ऊचो आहे. जीवन में सुंदरता खे चिटीअ तरह कला ई चिटे थी. हर देश खे पंहिंजी तहज़ीब ते नाज़ु आहे.

(ii) मुल्क जे विराहाङ पुॼाणा सिंधियुनि जी कठिनु परीखिया थी आहे. मुंहिंजे लेखे घणे भाङ इन

परीखिया मां लंघंदा पारि पवंदा वञनि था. इन आज़्माइश जी आग मां सभु सलामत कीन था पहुचनि. के लहिसिजी वञनि था. छिडा भस्मु बि थी वञनि था. सेकु त सभ खे लग थो, पर अंत में संदनि नैतिकु शक्ती सिंधियुनि खे ऊचनि आदर्शनि जी मंज़िल ड छिकींदी वञे थी.

इहो सुभावीकु आह. सिंधियुनि जे इतिहास जा थोरा ई के, किनि कमज़ोरियुनि जो बयानु था डियनि, त घणेई बिया संदनि नैतिकु बल जी साख था भरीनि. पुराणे इतिहास जी हिति मां गाल्हि कोन थो करणु घुरां. इहो त अञा मोअनि जे दड़े ऐं सिंधु जे बियनि खंडहरनि जे पट मां पुरर्जन्मु पियो वठे. धीरे-धीरे संदसि छठी पेई लिखिजे. नकी की अरबनि जी काह वक़्ति सिंधु जी राणी लाडो देवीअ जी सूरिहियाईअ ड इशारो थो करियां. राणीअ राजा जे कत्ल थियण बैदि पंहिंजा सभु ज़र ज़ेवर विकिणी नई सेना तयारु करे अरबनि सां युध जारी रखी. आगाटे हिन्दस्तान जी तारीख़ में जौहर जे पहरिएं मिसाल जो वर्णनु थो करणु घुरां, जडहिं युध में हाराइण पुजाणा राणी लाडोदेवी ऐं राजाई कुल जे सभिनी ज़ालुनि महल जी हिक कोठीअ अंदरि पाण खे बंदि करे पंहिंजनि हथनि सां पाण खे आग डई अरबनि खां पाणु बचायो. आम सती प्रथा में ऐं राणी लाडोअ जे अरबनि खां पाणु बचाइण लाइ जौहरु करण में वडो फर्कु आहे !

8. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 1×15=15

(i) संसार रूपी वृक्ष जिसका यहाँ वर्णन किया गया है, उसे समूल काट देने यानि सांसारिक बंधनों से मुक्त होने का उपाय भी बताया गया है। भगवान कहता है कि वह आदि-अन्त रहित, अच्छी तरह स्थित पीपल का वृक्ष दृढ़ वैराग्य रूपी शस्त्र से काटा जा सकता है। वैराग्य अर्थात् अनासक्ति, अरुचि। संसार में अरुचि उत्पन्न होने से निर्मोही बनने से ही वह संसार रूपी वृक्ष कट सकता है और तब जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो सकते हैं। वैराग्य से ही अंहकार नष्ट होता है, ममत्त्व दूर होता है तथा वासनाएँ लुप्त हो जाती हैं और तभी उस वृक्ष के आदि कारण परमात्मा की सच्ची खोज हो सकती है। तभी उसमें पूर्ण विश्वास उत्पन्न होता है। वह परमात्मा कैसा है, जिसे पाकर संसार में वापस लौटना नहीं होता, मोक्ष की प्राप्ति होती है, जीते जी मुक्ति पद प्राप्त करते हैं ? वह जीवन-मुक्ति की अवस्था कौन-सी है ? उस स्थिति में मोह नहीं रहता, संग-दोष नहीं रहता यानि आसक्ति नष्ट हो जाती है। अध्यात्म अर्थात् परमात्मा में सदैव स्थिति रहती है, मन उसी में ही लगा रहता है; कामनाएँ नष्ट हो जाती हैं, सुख-दु:ख रूपी द्वंद्वों से छुटकारा मिलता है और परम पद प्राप्त होता है।

(ii) प्रथम विश्वयुद्ध शुरू होने के 100 वर्ष पूरे होने पर आयोजित स्मृति समारोह के दौरान संयुक्त राष्ट्र (यू. एन.) मं रवीन्द्रनाथ टैगोर की गीतांजलि गूँजी। भारत के राजदूत अशोक कुमार मुखर्जी ने नोबल पुरस्कार सम्मानित कवि की इस कृति की एक कविता पढ़ी, जिसे रिकॉर्ड भी किया गया। कविताएँ और उनकी रिकॉर्डिंग को सोमवार को यू. एन. में ब्रिटेन के मिशन द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया।

टैगोर की कविताओं का संग्रह 'गीतांजलि' 1910 में प्रकाशित हुआ था। भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने कहा कि जिस समय विश्वयुद्ध के बादल मंडरा रहे थे उस समय टैगोर की कविताओं ने विश्व को घेरते भौतिकवाद से इतर इंसान और ईश्वरत्व में सरल-सा विश्वास पैदा किया। उनकी कविताओं की भावनाओं ने विश्व में सच्चाई और सौन्दर्य की दोबारा खोज करते हुए धीरज, विश्वास और उम्मीद जगाते हुए पूरी पीढ़ी को प्रेरित किया। समारोह के दौरान प्रथम विश्वयुद्ध की तस्वीरों वाली एक लघु फिल्म भी दिखाई गई। फिल्म में दनियाभर के युद्ध मैदानों में लड़ते भारतीय सैनिकों की द्रवित कर देने वाली तस्वीरें थीं।